

(कामध्वजमनु॥४॥) श्रीया क कामध्वजसूक्तं पलत्रादि तता प्रकीर्णम् । अनयार्थेन यत्नवर्तनीतां श्रीं ततः पदं ॥ अथ
 कामध्वजमनु॥४॥ कदम्बकेसुमे॥ पालानकसुमेवाथ संजयो रयतसंख्या ॥ तथा दर्शनं होभनं सर्वसिद्धिप्रद
 स्मृतं ॥ अतः न जय मुख्यादिदं कदम्बममाहर्तुं ॥ अथ वामूखमनु॥४॥ उवा मुखमाह मायवतानि यत्रामकांसा
 हा ॥ यादकं ग्लूकस्थामूखमनु॥४॥ पालानकसुमेवते लकजया दर्शनं क॥ होभनं वामविधिना सर्वसिद्धि
 प्रविदति । इति मन्त्रं जयानि सफक्षकसुमानिवा दला निवर्तनं कथ्यः कामिनीनां संगमः ॥ अथ यामिनीव
 नीकवर्णं ॥ कामध्वजपदं येषु मोकावदथ मोहयः ॥ साहर्नकमतामनु॥ नागवल्लीदले लिखे ॥ यथनेमध्वयुकन
 नविवावेति मन्त्रितं । नतर्धदीयमानं तस्य मिनीवेन तारिरेव ॥ अथ विधिः श्रीवनीकवर्णं ॥ उवा वदितयथाका विहंगमः

१ श्रीरव नु क म नी वान वृ नदा द द द नु क सि ॥
 द द यी । काम देवा य त स्मै व सा हा ह्य मु म ना रु व । पि ष्ठा जा ती रु ल न र हा मूल ना य न र व य ॥ स पृ ष्ठा रु न कि न ले १ ना ग व
 श्री द लो कि य ॥ नि म कुा न न म कु ण न वि वा न य दाय य ॥ १ त रु क व मा न ण वि नि नी व न त नि य ॥ अ थ नी खि नी व नी क व
 वी ॥ १ न म ना क त (अ मि ति स्वा हा न क थ द द यी । अ र्थ म ह्य सि धि म कु ४ की र्ति त ४ पू र्व मू वि रि ४ ॥ म कु ण न न र र्थ मूल त
 ग न र्सी रु व । श्री रु ल न र व र्म द या त नी खि नी व न त नि य ॥ अ थ रु सि नी व नी क व वी ॥ १ का वा धि वि य म थ्र काम दे वा य
 व न्य थ त स्मै स्वा रु ति क थि ना म कु ण न म नी ध र ॥ क या त य क र्सी यि ष्ठा म धू ना थ नि म कु य ॥ म कु ण न न त दाना द्रु मि
 नी वे न त नि य ॥ ॥ धू प वि धि ॥ च न्द र्ते क म र्म या धि ४ का र्मा र्ग क म र्म रु ल । दे व दा न र्सी यि ष्ठा म धू ना स रु मि ध य ॥
 व ला स रु न स रु र्थ च न्द नी य व ती व वी । र्ग वि रि ४ स मे धू पो त्ते व वि र्ध वि मा ह य ॥ ॥ वि ना म लि धू य ॥ ॥
 न ल सि न दाय श्री र व न व ह क क ठा मि

॥ गमय सा विषय तीर्थ तीर्थ सा हू मिसा धन कन व ती स ड य न भू हिन ता व न उ हा आ स पा स अ व ह न व
दन दि ग या ल न व य ह ॥ वा जा क र्मु मू ने अ ड न क्रि वा को न गू न य रि सा अ ड न
सा न वा न व ह म सा वा न न न ग सा अ ड न न द र व न ह म का दे ख न मे न व स्य हा य त नि के व य ह ॥ ॥
सिद्धि ॥ ॐ न मो मा र्ते गी ती रु ग नी ज्व नी वा छु ती अ मू की म म ता मे न म म ता य न सा र्ने ग्य यू वं ति रु ग सिं व स
र हू हू हू सा हा ॥ ५१ ॥ न खे ज य न य न गी स स य न का लं य स्या ना म गृ ही त्वा यू न के त य वि व स स फ दि न य
स्य ॥ ॥ ॐ न मा म दे व य का म व नी क न ना य अ मू क स्य द द र्ज व ॥ ५२ ॥ ॥ ग म य ज य न य न न न स्य ॥

(ॐ) विष्णु वसूनाम महामनुस्य वक्राजसि ४ गयत्रि कुन्द ४ विष्णु वसूनाम गर्धर्वा देवता क्वां वीर्ज क्वां भक्ति मम गर्ध
धर्व प्रसाद सिद्धो (ॐ) विष्णु विनियोग ४ ॥ व्रति मय्यादि न्यास ४ ॥ ॥ अथ कर्त्तव्यास ४ ॥ क्वां ४ अकृता य रुट ॥ ४ ॥ क्वां अ
गुहा स्थान म ४ ॥ क्वां तज्ज निस्थान म ४ ॥ क्वां मध्यमा स्थान म ४ ॥ क्वां अनोमिका स्थान म ४ ॥ क्वां कनिष्ठिका स्थान म ४ ॥
क्वां कलान यथा स्थान म ४ ॥ नर्वह दयादि न्यास ४ ॥ ॥ ध्यान ॥ ध्यायेत् ॐ कुरुयादिते नथ यत्र ४ घूर्ण कुरु ४
केलिते कुरु लस्य गययाति कुमल कन्या सते शब्दित । गर्धर्वा धियति यम न्न च दनं विष्णु वसूनाम ४ यम म
नं तस्य जयति लं शनियति कन्या मसी क्वां कित ॥ व्रति ध्यात्वा ॥ ॥ मनु ॥ क्वां विष्णु वसूनाम गर्धर्वा कन्या कानां
अधिपति ४ स्य नूयसा लं कालां गदि हिम नम तस्य विष्णु वसूनाम ४ ॥ ४० ॥ होमता यनयाय तव्यं वसति ॥ ॥